नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणाप्रतापस्नातकोत्तरमहाविद्यालय

जंगल धूसड़-गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : .....

दिनांक 06.10.2018

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी०जी० कालेज, जंगल धूसड़, तत्वावधान में गोरखपुर के योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम एवं योगिराज बाबा गम्भीरनाथ नि:शुल्क सिलाई कढ़ाई केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में आयेाजित योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्मृति व्याख्यान कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में किसान पी०जी० कालेज सेवरही के पूर्व प्राचार्य डॉ० वेद प्रकाश पाण्डेय ने ''ज्ञान के स्रोत'' विषय पर बोलते हुए कहा कि ज्ञान समझ को विकसित करने वाली शक्ति है। ज्ञान एक ऐसी साधना है, जो देखने, सुनने, पढ़ने एवं अनुभव व अनुमान के द्वारा सतत् रूप से चलती रहती है। ज्ञान के द्वारा मनुष्य सहज ही उन गुणों को प्राप्त कर सकता है जो उसे मनुष्य की श्रेणी से उठाकर देवत्व का दर्जा दिलानें में समर्थ है। देखना, पढ़ना, सुनना, अनुमान, आन्वेक्षण इत्यादि ज्ञान प्राप्ति के प्रमुख स्रोत हैं, जिनके द्वारा मनुष्य ज्ञान के अथाह सागर में डूबता–उतराता रहता है। ज्ञान ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य सृष्टि में व्याप्त दुखों से न सिर्फ पार पाता है, अपितु मानवता एवं समाज के भलाई एवं उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। ऐसे में योगिराज बाबा गम्भीरनाथ का ज्ञान अतिविशिष्ट था। अपने ज्ञान के बल पर बाबा गम्भीरनाथ जी ने समाज को प्रबुद्व कर उसे एक नई जीवन दृष्टि प्रदान की। योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी आध्यात्मिक धारा की ऋषि परम्परा के एक श्रेष्ठ प्रतिनिधि थे। वे साक्षात योग, आध्यात्म एवं भारतीयता के परिचायक थे। वो साक्षात मनुष्य में रूप में देवऋषि थे। प्रलय एवं सर्जन की क्षमता में लैस बाबा गम्भीर नाथ जी महाराज नाथपंत के साधक होते हुए भी सामाजिक समरसता के जीवंत उदाहरण थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राव ने कहा कि योगिराज बाबा गम्भीरनाथ एक सिद्धपुरूष थे। वे सिद्धिप्राप्त योगसिद्ध महात्मा थे जिनका प्रभाव असाधारण था। बाबा गम्भीर नाथ जी ने नाथ सम्प्रदाय के योग सिद्धांत को पुनर्जीवित करने का कार्य किया। नाथपंथ के इतिहास में मध्यकाल और आधुनिक काल के बीच के कालखण्ड में एकमात्र योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी ही ऐसे साधक हुए है जिनके पास अनेक दैवीय सिद्धियां थी। पुनर्जीवन प्रदान करने की शाक्ति एवं परकाया प्रवेश की सिद्धि के अनेश: उदाहरण बाबा गम्भीर नाथ जी के संदर्भ में मिलते है। बाबा गम्भीरनाथ शान्ती एवं गम्भीरता के साकार रूप थे। उन्होंने मानवता को योग–शाक्ति से सम्पन्न किया। योगिराज बाबा गम्भीरनाथ को हठयोग, राजयोग और लययोग के क्षेत्र मे सिद्धि प्राप्त थी। कार्यक्रम का संचालन बी०एड्० विभाग की प्रभारी श्रीमती शिप्रा सिंह जी ने किया। कार्यक्रम में डॉ० सुबोध मिश्र, डॉ० सुभाष कुमार गुप्ता, श्री नन्दन शर्मा, डॉ० महेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ० आरती सिंह, डॉ० अभिषेक वर्मा, श्रीमती मनीता सिंह, सुश्री प्रियंका मिश्रा, डॉ० राम सहाय, डॉ० शिवकुमार वर्नवाल, डॉ० विजय चौधरी, श्रीमती साधना सिंह, सुश्री रचना सिंह, श्रीमती पुष्पा निषाद, श्रीमती विभा सिंह, श्रीमती अनुभा श्रीवास्तव, सुश्री पल्लवी नायक, डॉ० हनुमान उपाध्याय, श्री हरविन्द श्रीवास्तव सहित शिक्षक, कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित रहें।

(डॉ0 राजेश शुक्ला)

सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी